ISSN 2454-2695
Vol 6 Issue 10 October 2020

डॉ0 राजेन्द्र मिश्र के एकांकी एवं शिक्षा की समस्या

रीना सिंह
पूर्व शोधार्थी (संस्कृत-विभाग)
दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय,
गोरखपुर

शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा के 'शिक्ष' धातु से बना है, जिसका अर्थ है– सीखना या ज्ञान प्राप्त करना। शिक्षा को 'विद्या' भी कहा गया है जो 'विद' धातु से बना है, उसका तात्पर्य जानना या ज्ञान प्राप्त करना, वर्तमान समय में शिक्षा को त्रिध्रुवीय प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया गया है। अर्थात् शिक्षा में शिक्षक, शिक्षार्थी और पाठ्यक्रम को सम्मिलित किया गया हैं अतः यह तीनों ध्रुव शिक्षा के आन्तरिक पर्यावरण का निर्माण करते हैं, जिससे शिक्षा देने और प्राप्त करने का सर्वोत्तम पर्यावरण उपस्थित रहे। शिक्षा को और उत्कृष्ट बनाने के लिए बाह्य पर्यावरण (संसाधन, प्रशासन, अभिभावक का दृष्टिकोण इत्यादि) भी महत्वपूर्ण भूमिका में रहते हैं।

प्रश्न यह उपस्थित होता है कि वर्तमान शिक्षा में आयी समस्या का प्रमुख कारण क्या है ? वस्तुतः शिक्षा में आयी समस्या का प्रमुख कारण शिक्षा के किसी भी घटक में आयी विकृति है। अतः इनका विवेचन अति महत्वपूर्ण है।

शैक्षिक स्तर का प्रमुख एवं प्रथम घटक शिक्षक हैं। किसी भी शैक्षिक संस्था की गुणवत्ता उसके शिक्षकों पर निर्भर करती है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् शिक्षा का प्रसार तीव्रगति से हुआ, जिसमें अनेक ऐसे लोग शिक्षक बने, जिसमें अपेक्षित समर्पण भाव नहीं था। वर्तमान समय में भी बहुत से ऐसे शिक्षक हैं, जिनमें समर्पण भाव नहीं है। अनेक शिक्षक अतिशय धन संचयन हेतु ट्यूशन कर रहे हैं। कुछ शिक्षक पढ़ते कम है पढ़ाते अधिक हैं। कुछ में उत्तरदायित्व का विषरण हो गया है। वस्तुतः आज अनेक ऐसे अध्यापक हैं, जिनमें विषय ज्ञान सतही स्तर का है। वे अपने कर्तव्यों के प्रति भी सचेत नहीं हैं। इस सन्दर्भ में प्रशान्त बनर्जी ने लिखा है– ''सरकारी विद्यालयों में अध्यापक सरकारी होने के कारण निश्चिन्त होते हैं। परीक्षाफल चाहे जैसा हो, उन्हें इससे क्या फर्क पड़ता हैं वर्ष समाप्त होने पर शायद ही कोई अध्यापक अपना पाठ्यक्रम पूरा कर पाता है। बच्चों को पढ़ाने में ध्यान देने के बजाय वे अपने विभाग के अधिकारियों का अधिक ख्याल रखते हैं।''[1] अयोग्य विद्यार्थी, शैक्षिक स्तर के गिरने का द्वितीय कारक होते हैं। अयोग्य विद्यार्थियों का पदार्पण विद्यालय में तब हो जाता है, जब प्रशासन या शिक्षा विभाग के अन्य

1. *भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्यायें – डॉ0 रामशकल पाण्डेय, 2008 पृष्ठ–310*

Copyright ⓒ 2020Authors

ISSN 2454-2695
Vol 6 Issue 10 October 2020

अधिकारियों द्वारा विद्यार्थियों के अपेक्षित योग्यताओं व उपलब्धियों को अर्जित न कर पाने पर भी उत्तीर्ण कर अगली कक्षा में प्रवेश दे दिया जाता है। परिणामस्वरूप विभिन्न कक्षाओं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर में विषमता बढ़ने के साथ कठिनाइयाँ बढ़ती रहीं व इन अधिगम कठिनाईयों का निराकरण न होने पर अन्ततः निम्नस्तरीय शिक्षित जनशक्ति तैयार हुई।

संस्कृत विद्वानों ने अपनी अति विशिष्ट शैली में विभिन्न सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया है। रचनाकारों की रचनाओं में समस्यायें आरोपित नहीं लगतीं, अपितु सहज से अभिव्यक्त होती हैं। ऐसी ही सहज अभिव्यक्ति प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र की सर्जनाओं में निहित है।

प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र जी शिक्षा की समस्या को लेकर अनेकानेक रचनाओं का सृजन किया है, जिनका उल्लेख इस प्रकार है–

एकांकी संग्रह		एकांकी	
❖ नाट्यपचगऽयम्	1984	1.	फण्टूसचरितभाणः
❖ रुपरुद्रीयम एकांकी संग्रह	1986	1.	स्वप्नाज्जागरणं वरम्
❖ नाट्यसप्तपदम् एकांकी संग्रह	1996	1.	वाणीघटकमेलकम्
		2.	साक्षात्कारः
❖ नाट्यनवरत्नम् एकांकी संग्रह	2007	1.	प्रतिभापरीक्षणम्
		2.	प्रत्यक्षरौखम्
❖ नाट्यनवग्रहम् एकांकी संग्रह	2007	1.	गुरुदक्षिणा
❖ नाट्यनवार्णनम् एकांकी संग्रह	2010	1.	विद्यालय निरीक्षण प्रहसन
		2.	बेताल प्रहसनम्

इस प्रकार प्रो0 मिश्र की पैनी दृष्टि समाज के प्रत्येक समस्याओं के प्रति है। प्रो0 मिश्र अपने प्रत्येक एकांकी में वर्तमान की समस्याओं का जीवन्त चित्र प्रस्तुत करते हैं। साथ ही साथ वे इन समस्याओं के समाधान के तौर–तरीकों से भी अवगत कराते हैं।

प्रो0 मिश्र की ये एकांकियाँ शिक्षा में उल्लिखित समस्याओं के विभिन्न कारणों को प्रदर्शित करती हैं। स्वत्नाज्जागरणं वरम् नामक एकांकी में मिश्र जी ने विश्वविद्यालय के शिक्षकों के अधकचरे ज्ञान तथा उनके दुर्गुणों को प्रदर्शित किया है। वाणीघटकमेलकम् नामक एकांकी में एक अहंकारी संस्कृत पाठशाला निरीक्षक का विद्वेष वर्णित है। इस अहंकारी और विद्वेषी भाव के कारण शिक्षा में विभिन्न प्रकार के अवरोध उत्पन्न हो सकते हैं। परन्तु इस समस्या के समाधान में 'ज्ञान की पराकाष्ठा' उत्तम उपाय होता है।

साक्षात्कार नामक एकांकी के माध्यम से एकांकीकार अभिराज राजेन्द्र मिश्र द्वारा शिक्षा जगत् में व्यापत भ्रष्टाचार एवं राजनीति की दखलदांजी की तरफ ध्यान आकृष्ट किया गया है। प्रतिभापरीक्षणम् में

Copyright ⓒ 2020Authors

ISSN 2454-2695
Vol 6 Issue 10 October 2020

वर्तमान प्राचार्य एवं विद्यार्थियों के अधकचरे ज्ञान तथा विकृत मानसिकता पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया गया है। इसी प्रकार प्रत्यरौरवम् एकांकी में उच्च शिक्षाविदों का जाली मार्कशीट बेचने जैसे नवीन भ्रष्टता को दर्शाया गया है।

फण्टुसचरितभाण में लोफर और उच्छृखंल प्रकृति के बालकों के व्यवहारों का चित्रण किया गया है तथा यह भी स्पष्ट किया गया है कि ऐसे बालक शैक्षिक वातावरण को किस प्रकार दूषित करते हैं। ऐसे ही 'गुरु दक्षिणा' में शिक्षा की सार्थकता पर प्रकाश डाला गया है। इसी प्रकार विद्यालय निरीक्षण प्रहसनम् में भाई–भतीजा वाद के आधार पर शिक्षकों की नियुक्ति तथा ऐसे नियुक्ति से शिक्षकों की ज्ञान शून्यता को संज्ञान में लाया गया है।

इसी प्रकार बेतालप्रहसनम् में शिक्षित एवं चालाक स्त्री के विद्यालय के मैनेजर से अंतरंग सम्बन्ध बनाकर विद्यालय में नौकरी लेने तथा मैनेजर की भार्या तक बनने का प्रसंग प्रदर्शित किया गया है। साक्षात्कार नामक हास्य–एकांकी में रचनाकार ने शिक्षा जगत् में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं राजनीति से अर्हताओं से युक्त तथा जरूरतमन्द प्रत्याशी चयनित नहीं हो पाता। परन्तु दुर्भाग्य है कि इस निम्न स्तर की राजनीति के हस्तक्षेप वश वह पद राजनेताओं के निरक्षर भट्टाचार्य भाई–भतीजों को प्राप्त होता है।

इस एकांकी में किसी महाविद्यालय के आचार्य का कार्यालय हैं उस कार्यालय में प्राचार्य, मनोविज्ञान विभाग की अध्यक्षा श्रीमती देवकी तथा हिन्दी विभाग के अध्यक्ष शेखर, चयन समिति के सदस्य हैं। कार्यालय में लिपिक का चयन होना है। अतः चयन समिति अपने कार्य हेतु कार्यालय में उपस्थित है। कार्यालय के बाहर प्रतिभागीगण भी पंक्तिबद्ध होकर प्रांगण में बैठे हैं। प्रतिभागियों की संख्या छः है, जिसमें अनन्तराम सबसे सुयोग्य प्रत्याशी हैं जो कि स्नातकोत्तर की परीक्षा पास किया हैं परन्तु बेरोजगारी की मार ने उसे महाविद्यालय में लिपिक पद प्राप्त करने की होड़ में संलग्न कर दिया। शिक्षा में बेरोजगारी के कारण आई ऐसी समस्या को मिश्र जी ने बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। यथा– ''चपरासी सभी प्रतियोगियों में से अनन्तराम को सर्वप्रथम बुलाता है। तत्पश्चात् अनन्तराम प्रमाण पत्रों के साथ कक्ष में प्रवेश करता है और सभी लोगों का प्रणाम करके अनुमति पाकर सामने कुर्सी पर बैठ जाता है। प्राचार्य अनन्तराम के प्रमाण पत्रों को देखने के उपरान्त यह कहता है कि अरे अनन्तराम तुम हिन्दी में स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण हो ? प्रत्युत्तर में अनन्तराम विनयपूर्वक कहता है, जी हाँ। महोदय मैं स्नातक कक्षा में अंग्रेजी भी पढ़ा हूँ और हिन्दी, अंग्रेजी टाइप करना भी अच्छा जानता हूँ। एक मिनट में चालीस शब्द टाइप करने की गति है। महोदय ! पिता के न होने के कारण मैं असहाय हूँ। यदि मुझे यहाँ यह नौकरी मिल जाए तो मेरा जीवन वृत्ति हो। प्राचार्य पुनः स्नेह पूर्वक यह कहता है– 'प्रिय अनन्तराम ! बस ज्यादा विस्तार मत करो, तुम्हारी योग्यता बहुत है। परन्तु तुम्हारे जैसे उच्च योग्यता वाले व्यक्ति को

Copyright ⓒ 2020Authors

ISSN 2454-2695
Vol 6 Issue 10 October 2020

लिपिक के पद पर कैसे नियुक्त कर सकता हूँ। तुमसे कम योग्यता वाले हमारे यहाँ एल0टी0 के अध्यापक हैं, तुम ही बताओ, समाज क्या कहेगा?[1] अत्यधिक शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त यदि रोजगार नहीं प्राप्त होता तो लोगों में कुण्ठा, विषाद, मनोविक्षिप्तता इत्यादि मानसिक विकृति उत्पन्न हो जाती है। प्रो0 मिश्र ने इस तथ्य को 'सुमंगल' नामक मनोविक्षिप्त प्रतिभागी परन्तु उच्च शैक्षिक योग्यता को धारण करने वाले, के माध्यम से प्रस्तुत किया।

चयन समिति के सदस्य शेखर ने सुमंगल नामक प्रतिभागी से अपनी सम्पूर्ण योग्यता को प्रकट करने के लिए कहा। प्रत्युत्तर में सुमंगल कहता है– 'बी0ए0 परीक्षा अनुत्तीर्ण हूँ। टंकण नहीं जानता हूँ, गणित से डरता हूँ, दृष्टि क्षीण है। कुछ भी करने में उत्साह नहीं है। पागल हूँ ऐसा सभी लोग कहते हैं।' चयन समिति का सदस्य सुमंगल का उत्तर सुनकर कहता है– 'तब क्यों यहाँ आये हो'। प्रत्युत्तर में सुमंगल कहता है केवल इतना ही मात्र जानने के लिए अब मेरी प्रतीक्षा न करें, किसी और को लिपिक के पद पर नियुक्त करे प्राचार्य महोदय। मेरा सहारा मत बनिये, मैं अवकाश प्राप्त हूँ। ऐसा उत्तर सुनकर प्राचार्य लम्बी सांस लेते हुए सुमंगल के बारे में शेखर से बताता है– 'यहो देवगति विचित्र ही है। यह इसी विद्यालय का छात्र है। स्नातक परीक्षा प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण है, टंकण भी जानता है। यह युक्त विद्या विशारद भी है।' आश्चर्य करते हुए शेखर कहता है– 'तब क्यों झूठ बोल रहा है?' पुनः प्राचार्य और स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि इस बालक के घर की स्थिति ठीक नहीं है। यह युवक जीविका ढूढने के लिए प्रतिहार घूमते–भटकते हुए कुछ विक्षिप्त हो गया है। इसी कारण बिना विचारे पागलों के समान जो कुछ भी बोलता है ठीक है। इस अवस्था में वह कुछ भी कह सकता है।[2]

इस तथ्य के माध्यम से मिश्र जी समाज का वह जीवन्त दृश्य प्रस्तुत कर रहे हैं, जो वास्तव में सामाजिक व्यवस्था के चलन में है। लोग इतना कुछ पढ़ लेने के बाद भी रोजगार नहीं पा रहे हैं और समाज में उपेक्षित भाव से देखे जा रहे है तथा साथ ही साथ मानसिक विकृति के शिकार भी हो जा रहे हैं।

अन्ततः प्रो0 मिश्र इस एकांकी के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था में राजनैतिक हस्तक्षेप को स्पष्ट करते हैं। वे दर्शाते हैं कि आज वर्तमान शिक्षा पद्धति में एक बड़ा दोष मात्र राजनैतिक हस्तक्षेप के कारण उत्पन्न हो रहा है। शिक्षकों, लिपिक तथा अन्य कर्मचारियों के चयन में योग्य अभ्यर्थियों का चयन न होकर मात्र उन्हीं लोगों का चयन होता है जो या तो राजनैतिक स्रोतों से आयें हों अथवा रिश्वत लेकर आयें या प्रबन्धक के सम्बन्धी हों। इस तथ्य का प्रदर्शन मिश्र जी ने अन्तिम प्रतिभागी के पत्र द्वारा प्रस्तुत

---

1. *'साक्षात्कारः', नाट्यसप्तपदम्,– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, 1996, पृष्ठ संख्या–76*
2. *'साक्षात्कारः', नाट्यसप्तपदम्,– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, 1996, पृष्ठ संख्या– 84*

Copyright ⓒ 2020Authors

ISSN 2454-2695
Vol 6 Issue 10 October 2020

किया। यथा– ''कृपालु नामक प्रतिभागी प्राचार्य से यह कहता है कि– श्रीमन् यह पत्र आपके लिए है, प्राचार्य संशकित होकर कहता है यह पत्र किसका है ? इसमें क्या लिखा है ? इस प्रकार प्राचार्य धीरे–धीरे पत्र को पढ़ता जाता है। पत्र राज्य शिक्षा मंत्री विद्याभूषण जी का है, जिसके पत्र में महाविद्यालय में पुस्तकालय व्यवस्था से सम्बन्धित सहयोग पर ध्यान आकृष्ट कराते हुए तथा विभिन्न नियुक्तियों का समर्थन करने का आश्वासन दिया गया है। परन्तु उनके पत्र वाहक जो कि राज्य शिक्षा मंत्री के पिता के ससुर के दामाद हैं।''[1] उन्हें विद्यालय में लिपिक के पद पर रखने के लिए आग्रह किया गया है। यद्यपि यह प्रतिभागी बी0ए0 की परीक्षा अनुत्तीर्ण है तथा टंकण इत्यादि कार्यों को नहीं जानता है, फिर भी इसका चयन हो जाता है।[2]

इस प्रकार मिश्र जी ने यह स्पष्ट किया है कि विद्यालय के अपने ही कार्यों को जो पूर्णतया वैध है, करने के लिए राजनैतिक दबाव में आकर विद्यालय का प्राचार्य किस तरह से अयोग्य प्रतिभागी का चयन कर लेता है। इस एकांकी में आचार्य द्वारा अनेक सुयोग्य प्रत्याशियों के रहते हुए भी अयोग्य प्रत्याशी (शिक्षा मंत्री का सम्बन्धी) का चयन करने का आश्वासन दिया जाता है और समिति सदस्यों के पूछने पर प्राचार्य यह कहता है कि– 'हम इसका साक्षात्कार क्या लेंगे? यह तो मेरा ही साक्षात्कार लेने आया था। यदि यह नियुक्त नहीं हुआ तो मैं ही अनियुक्त हो जाऊँगा।'[3] इस प्रकार प्राचार्य की इस आन्तरिक विवशता से हम आज की चयन प्रक्रिया एवं साक्षात्कार का खोखलापन और प्रतिभा का अवमूल्यन स्वयं जान लेते हैं। वस्तुतः नाट्यकार ने आधुनिक समाज को खुली आँखों से देखा है, हृदय से पहचाना है। अतः उनकी समस्त संवेदनाएँ एवं अनुभूतियाँ अत्यन्त सजीव प्रतीत होती हैं।

मिश्र जी बड़े ही पारदर्शी दृष्टिकोण से समाज की समस्त बुराइयों तथा समस्याओं को उद्धृत करते हैं। मिश्र जी पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित हुए भारतीय समाज के शैक्षिक वातावरण को प्रस्तुत करते हैं। वह स्पष्ट करते हैं कि भारतीय समाज में पश्चिमी बुराइयाँ घर करने लगी हैं। भारतीय समाज सदैव से नैतिक, मूल्यपरक, चरित्रवान बनने की शिक्षा लेता रहा है। परन्तु वृहत् रूप में हुए सामाजिक परिवर्तनों ने समाज को दूसरी दिशा में मोड़ दिया, जो वर्तमान रूप में दिखायी दे रहा है। वस्तुतः मिश्र जी का दृष्टिकोण सामाजिक परिवर्तनों के फलस्वरूप व्यक्ति में नैतिक पतन, शैक्षिक पतन और चारित्रिक पतन को उद्धृत करना है। फण्टूसचरितभणः मिश्र जी की अनूठी एकांकी है, जिसमें शिक्षा के वातावरण में व्यक्ति/छात्र के चारित्रिक दोषों की अभिव्यक्ति है। इसमें छात्रों का पढ़ाई के प्रति अरुचि तथा घुमक्कड़

---

1. *'साक्षात्कारः', नाट्यसप्तपदम्,– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, 1996, पृष्ठ संख्या : 84–85*

2. *'साक्षात्कारः', नाट्यसप्तपदम्,– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, 1996, पृष्ठ संख्या–85*
3. *'साक्षात्कारः', नाट्यसप्तपदम्,– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, 1996, पृष्ठ संख्या– 85*

Copyright ⓒ 2020Authors

ISSN 2454-2695
Vol 6 Issue 10 October 2020

एवं लोफर प्रवृत्ति के प्रति रुचि को दर्शाया गया है। छात्र अपने अभिभावकों तथा शिक्षकों के नियंत्रण से परे है। उनका ध्यान बुराईयों पर सर्वाधिक है, परन्तु अच्छाईयों की सर्वाधिक कमी है।

इस प्रकार हम यह कह सकते हैं ऐसे छात्र, जिसमें न ज्ञान हो, न विद्या हो, न तप हो, न दान हो, न शील हो, न गुण हो और न तो धार्मिक कार्य हो, वे पृथ्वी पर भार के समान हैं।

नाट्यपञ्चगव्यम् में संकलित फण्ट्सचरितमाणः को मिश्र जी का प्रथम सामाजिक एकांकी माना जा सकता है, जिसमें मिश्र जी ने विश्वविद्यालय में व्याप्त अनैतिक वातावरण तथा उच्छृखलता को रुपायित किया है। उसमें नायक प्रत्युष एक युवा छात्र है। प्रत्युष यौवन की दहलीज पर पैर रखते ही डगमगा गया है। वह अपनी मामा की पुत्री के प्रति आसक्त है और उसी से मिलने के लिए इलाहाबाद के मम्फोर्डगंज मुहल्ले से कीडगंज तक की यात्रा करता हैं उसकी शिक्षा उसका मनोविज्ञान और उसके विचार सभी सामान्य युवा छात्रों से नहीं मिलते, परन्तु छात्रों से एक विशिष्ट समुदाय जो विश्वविद्यालय में आवारागर्दी करते हैं तथा उच्छृंखल प्रकृति के होते हैं, से बिल्कुल मिलते हैं।[1]

विद्यार्थियों का सतही ज्ञान तथा उनकी विकृत मानसिकता :

डॉ0 राजेन्द्र मिश्र जी ने नाट्यनवरत्नम् के 'प्रतिमापरीक्षणम्' एकांकी के माध्यम से शिक्षा में उत्पन्न समस्याओं को प्रकट किया है। वे वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर व्यंग्य करते हैं। वह विद्यार्थियों के सतही और ओछल ज्ञान को प्रतिबिम्बित करते हैं। साथ ही साथ छात्रों के विकृत मानसिकता को भी व्यक्त करते हैं। आज के बच्चे पश्चिमी अपसंस्कृति से आयातित छिछले मनोरंजन तथा जानकारियों के पीछे जिस तरह से पागल हैं तथा चरित्र निर्माण करने वाले धीर–गम्भीर ज्ञान के प्रति जिस तरह पूर्णतः उदासीन हैं– उसकी रोचक प्रस्तुति मिश्र जी द्वारा एकांकी में किया गया है।

इस एकांकी में विद्यालय में प्रवेश हेतु छात्रों की परीक्षा होती है। प्रत्येक छात्र की परीक्षा साक्षात्कार विधि द्वारा विषय विशेषज्ञ विद्वान द्वारा होना सुनिश्चित है। प्रत्येक प्रवेशार्थी से पाँच प्रश्न किया जाना है।[2] इस प्रकार प्रत्येक विद्यार्थी अपने–अपने तैयारी में लगे हुए हैं। एक परिवार का दृश्य एकांकी के आरम्भ में प्रस्तुत होता है, जिसमें अभिभावक विशेष का अध्ययन हेतु छात्र से आग्रह करता है। ऐसे में छात्र ने अभिभावक से यह कहा कि मानता हूँ, जानता हूँ पिता जी। परन्तु परीक्षक कुश्तीबाजों के भी बारे में तो पूछ सकते हैं। जैसे– अण्डरटेकर, वटिष्टा, शान माइकल्स और एडी गुरेर ह्विसमेरिको, मार्कहेनरी इत्यादि। इसलिए इनके बारे में समस्त ज्ञान अर्जित है। छात्र की इस मुढ़युक्त बातों को सुनकर

1.'*फण्टुसचरितभाणः', नाटयपञ्चगत्यम्,– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, 1996 पृष्ठ : 44–45*

2.'*प्रतिभापरीक्षणम्', नाट्यनवरत्नम्,– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, 2007, पृष्ठ संख्या–33*

Copyright ⓒ 2020Authors

ISSN 2454-2695
Vol 6 Issue 10 October 2020

अभिभावक मन ही मन कहता है– 'मूढ़ छात्र ज्ञात है तुम्हारा भविष्य, हे परमेश्वर इस राष्ट्र का भविष्य क्या होगा? वर्तमान छात्र तो केवल क्रिकेट के खेल को जानते हैं, चलचित्र के गीत की अन्त्याक्षरी प्रतिस्पर्धा जानते हैं। हालीवुड, वालीवुड, पोकेयान, टेनस्पोर्स्टस्, कार्टूनी कथा इत्यादि को जानते हैं।[1] परन्तु इन्हें अपने पौराणिक तथा रामायण–महाभारत आदि से जुड़े धारावाहिक रास नहीं आते और न ही इन्हें भारत के इतिहास, भूगोल, साहित्य एवं संस्कृति का ज्ञान है।[2]

साक्षात्कार में इतिहास, भूगोल, दर्शन तथा हिन्दी और संस्कृत के विशेषज्ञ प्राचार्य के कक्ष में उपस्थित हैं। प्रवेशार्थी छात्र गोपाल को प्राचार्य कक्ष में जाने के लिए (साक्षात्कार हेतु) चपरासी बुलाता है। तत्पश्चात् गोपाल वर्मा प्राचार्य कक्ष में जाता है। प्राचार्य गोपाल वर्मा को बैठाते हुए कहतें है कि किस विषय का आपने विशेष अध्ययन किया है ? प्रत्युत्तर में गोपाल कहता है, इतिहास, श्रीमन्। मध्यकालीन इतिहास में विशेष रुचि रखता हूँ। प्राचार्य ने कहा, बहुत अच्छा। तक प्रश्न किया जा सकता है। प्राचार्य ने समिति के सदस्य डॉ0 यूसुफ से प्रश्न पूछने के लिए निवेदन किया। तदोपरान्त डॉ0 यूसुफ ने गोपाल से पूछा, 'गुलामवंश का संस्थापक कौन था' ? उत्तर में गोपाल ने कहा– 'औरंगजेब श्रीमन्'। आश्चर्य चकित होकर पुनः यूसुफ ने प्रश्न किया, जिसके प्रत्युत्तर में गोपाल ने कहा– 'शेरशाह सूरी श्रीमन्'। विशेषज्ञ का माथा चकरा जाता है तथा वह अपने मस्तक पर हाथ रखकर उद्विग्न हो जाता है तथा पुनः प्रश्न करता है– 'रजिया सुल्तान किस शांहशाह की पुत्री थी?' गोपाल ने 'शाहंजहा' कहकर अज्ञानपूर्ण उत्तर की प्रस्तुति की। इसी प्रकार विशेषज्ञ ने प्रिश्न किया– 'फतेहपुर–सीकरी के महलों का निर्माता कौन सा मुगलशासक था?' तथा बाबर का युद्ध किसके मध्य हुआ था? उत्तर में गोपाल कहता है– 'फतेहपुर सीकरी के महलों का निर्माता फिरोजशाह तुगलक तथा बाबर का युद्ध हुमायूँ और राजासंग्राम सिंह के मध्य हुआ था।[3]

इस प्रकार इतिहास के विद्यार्थी का अज्ञानतापूर्ण उत्तर सुनकर विशेषज्ञ हतप्रभ हैं।

इसी तरह दर्शन का छात्र सुदर्शन को बुलाया जाता है। दर्शन के विशेषज्ञ डॉ0 सत्यपाल प्रश्न पूछना आरम्भ करते हैं कि भारतीय दर्शन का क्या नाम है ? वेदान्त में माया नाम का क्या अर्थ है ? सांख्य दर्शन के पुरुष का क्या परिचय हैं ? तथा मुक्ति इत्यादि क्या है। प्रश्न का उत्तर सुनकर वर्तमान छात्रों की अज्ञानता को प्रकट करता है। यथा– दर्शन का छात्र सांख्य दर्शन के पुरुष का परिचयात्मक व्याख्या व्याकरण के प्रथम, मध्यम एवं उत्तम पुरुष के रूप में करता है तथा वेदान्त की माया को कबीरदास की महाठगिनी के रूप में निरूपित करता है। आगे वह मुक्ति को स्पष्ट करते हुए कहता है–

---

1. *'प्रतिभापरीक्षणम्', नाट्यनवरत्नम्,– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, 2007, पृष्ठ संख्या–33*
2. *'प्रतिभापरीक्षणम्', नाट्यनवरत्नम्,– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, 2007, पृष्ठ संख्या–34*
3. *'प्रतिभापरीक्षणम्', नाट्यनवरत्नम्,– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, 2007, पृष्ठ संख्या–35*

Copyright ⓒ 2020Authors

ISSN 2454-2695
Vol 6 Issue 10 October 2020

मुक्ति का नाम कार्य समाप्ति है। जैसे कृषक का कृषि कार्य समाप्त होता है तो उसे मुक्ति प्राप्त होती है। छात्र परीक्षा देकर मुक्ति प्राप्त करते हैं। गृहिणी भोजन बनाकर मुक्ति प्राप्त करती है।[1]

भूगोल विषय की छात्रा निर्मला प्रवेश हेतु विषय विशेषज्ञ डॉ0 रत्नमाया के समक्ष प्रस्तुत होती है। डॉ0 रत्नमाया क्रमशः पाँच प्रश्न प्रवेशार्थिनी से पूछती, जिसका उत्तर सुनकर वे स्वयं भौचक्का हो जाती हैं तथा मन ही मन वर्तमान विद्याथियों के सतही ज्ञान तथा विद्यालय की नियति दोनों को कोसती है। विशेषज्ञ विद्वान ने निर्मला से पूछा कि सहारा मरूस्थल कहाँ स्थित है? मीकांग नदी कहाँ प्रवाहित होती है ? संसार के किस देश को सागर का जल धोता है ? कैरेवियन देश किस सागर में विद्यमान है ? तथा अन्तिम प्रश्न कंगारू जन्तु कहाँ पाये जाते हैं ? इन प्रश्नों का उत्तर निर्मला ने इस प्रकार बताया– 'सहारा मरूस्थल सुब्रतो राय के घर में स्थित हैं मीकांग नदी अफ्रीका महाद्वीप के कांगो देश में प्रवाहित होती है। कोबार दीप श्रीलंका सागर के सुनामी तरंगों से सर्वथा जलमग्न रहता था। चतुर्थ प्रश्न का उत्तर निर्मला कैरेवियान देश में अरब सागर स्थित होना बताती है। अन्तिम प्रश्न के उत्तर में निर्मला यह कहती है कंगारू जन्तु प्रायः जन्तुशाला में पाये जाते हैं तथा गत वर्ष मैंने दिल्ली के एक जन्तुशाला में देखा था।[2]

इसी प्रकार समस्त विद्यार्थियों के अधकचरे ज्ञान का विशेषज्ञों द्वारा एक–एक कर परीक्षण किया जाता है। अगले क्रम में हिन्दी के छात्र नृपेन्द्र विषय विशेषज्ञ प्रो0 दूधनाथ के समक्ष प्रस्तुत होता है तथा विशेषज्ञ नृपेन्द्र से पाँच प्रश्न इस प्रकार पूछता है– रानी केतकी की कहानी किसके कथा पर आधारित है तथा किसने लिखा है ?, वीरगाथा काल को कौन से कवि बड़े ही रोचक ढंग से लिखते हैं ?, वीरगाथा काल ..... ?, हिन्दी भाषा में तारसप्तक नाम क्या है ? तथा अन्तिम प्रश्न गोदान रचना किसकी है ? प्रत्युत्तर में नृपेन्द जो व्यक्त करता है वह नितान्त गलत है। जैसे प्रथम प्रश्न के उत्तर में नृपेन्द्र कहता है– .....। दूसरे प्रश्न का उत्तर देते हुए नृपेन्द्र कहता है– 'वीरगाथा काल को भूषण कवि सर्वाधिक रोचक ढंग से लिखते हैं कि तेरी बरही ने बर छीने हैं खलन के।' तृतीय प्रश्न के उत्तर– 'निश्चय ही वीर छत्रपति शिवाजी की वीरगाथा गायी जाती है।' चतुर्थ प्रश्न के उत्तर में तारसप्तक को मीराबाई का बाद्ययन्त्र सिद्ध करता है तथा अन्तिम प्रश्न के उत्तर में मुंशी प्रेमचन्द्र के गोदान उपन्यास को मृत्युवेला के दिया जाने वाला गोदान बताता है।[3]

---

1. *'प्रतिभापरीक्षणम्', नाट्यनवरत्नम्,– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, 2007, पृष्ठ संख्या : 36–37*
2. *'प्रतिभापरीक्षणम्', नाट्यनवरत्नम्,– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, 2007, पृष्ठ संख्या : 38–39*
3. *'प्रतिभापरीक्षणम्', नाट्यनवरत्नम्,– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, 2007, पृष्ठ संख्या : 39–40*

Copyright ⓒ 2020Authors

इस प्रकार इन प्रश्नों का उत्तर हिन्दी विषय के विद्यार्थी में अति निम्न स्तर के ज्ञान को प्रकट करता हैं साथ ही साथ समाज में शिक्षा की दयनीय दशा को पुनः संस्कृत के विद्यार्थी जीवानन्द की परीक्षा (साक्षात्कार) पं0 सोमनाथ के समक्ष होती है। पं0 सोमनाथ ने जीवानन्द से पाँच प्रश्न इस प्रकार किये– वेद किसने लिखा है ? पंचतन्त्र में किसकी कथा वर्णित है ? अष्टाध्यायी में कितने अध्याय हैं ? स्मृति वाङ्मय के बारे में क्या जानते हो? हमारे राष्ट्र में संस्कृत का क्या भविष्य है? जीवानन्द इन प्रश्नों का उत्तर व्यक्त करते हैं कि वेद की रचना कालिदास ने की है। पंचतन्त्र में पंचपाण्डव की कथा वर्णित है। अष्टाध्यायी में बारह अध्यायों का वर्णन बताया तथा स्मृति वाङ्मय का अध्ययन करने से स्मृति बढ़ता। अन्तिम प्रश्न का उत्तर इस प्रकार देता है– 'गुरूवर संस्कृत का भविष्य ही नहीं, अपितु इसका वर्तमान भी चमकता हुआ परिलक्षित होता है।'[1]

इस प्रकार के गलत उत्तरों से पं0 सोमनाथ आश्चर्यचकित हो उठते हैं।

शिक्षकों में ज्ञान की कमी :

प्रो0 मिश्र 'प्रतिभापरीक्षणम्' एकांकी के माध्यम से यह स्पष्ट करते हैं कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के दूषित होने में विद्यार्थी ही केवल जिम्मेदार नहीं हैं, अपितु शिक्षक जन विशेष रूप से जिम्मेदार हैं। प्रो0 मिश्र द्वारा इस एकांकी का सृजन यह प्रश्न उपस्थित करता है कि क्या कारण है कि बी0आर0सी0, एन0सी0टी0ई0, एन0सी0ई0आर0टी0 तथा यू0जी0सी0 इत्यादि संस्थाओं द्वारा स्कूलों की पाठ्यचर्या का मूल्यांकन, नवीनीकरण, पूर्व परीक्षा तथा पर्यवेक्षण करने के बावजूद भी शैक्षिक स्तर पर वास्तविक उन्नयन नहीं हो पा रहा है। यद्यपि इस प्रश्न के उत्तर में अनेक कारण सन्निहित हैं, जिसमें शिक्षकों की गुणवत्ता का ह्रास अर्थात् शिक्षकों के ज्ञान में कमी सबसे प्रमुख कारण है। इस कारण को प्रो0 मिश्र द्वारा एकांकी में उद्धृत करते हैं। प्राचार्य छात्र को विशेषज्ञ द्वारा पूछे गये प्रश्न 'बाबर का युद्ध किसके मध्य हुआ है?' का उत्तर स्वयं देते हुए कहता है– 'अरे तुम नहीं जानते हो, बाबर का युद्ध राणा प्रताप के साथ हल्दी घाटी के मैदान में हुआ था।'[2] इस प्रश्न का उत्तर सुनकर विषय विशेषज्ञ डॉ0 युसूफ का सिर घूमने लगता है। इस प्रकार का उत्तर अज्ञान विद्यार्थियों के अज्ञानता को मात दे देता है। विशेषज्ञ विद्वान हतप्रभ रह जाते हैं तथा इस विद्यालय की नियति को मन ही मन कोसते हैं।

इसी प्रकार शिक्षकों में अज्ञानता का रोचक प्रस्तुति प्रो0 मिश्र विद्यालय निरीक्षण प्रहसनम् के माध्यम से करते हैं। इस एकांकी का सम्पूर्ण दृश्य एक इण्टर कालेज के निरीक्षण को लेकर है, इस

---

1. *प्रतिभापरीक्षणम्', नाट्यनवरत्नम्,– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, 2007, पृष्ठ संख्या : 41–42*
2. *'प्रतिभापरीक्षणम्', नाट्यनवरत्नम्,– प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, 2007, पृष्ठ संख्या–35*

 Copyright ⓒ 2020Authors

ISSN 2454-2695
Vol 6 Issue 10 October 2020

कालेज के प्रबन्धक परिवहन मंत्री के भाञ्जे मि0 माहेश्वरी। माहेश्वरी जी के भतीजे डॉ0 सूर्यदीन माहेश्वरी भी इसी विद्यालय में हिन्दी के अध्यापक हैं। अन्यान्य प्रायः दो तिहाई अध्यापक भी प्रबन्धक जी के ही कुटुम्ब कवीले के हैं। विद्यालय का सम्पूर्ण अनुदान प्रबन्धक जी के जेब में जाता हैं योग्यतम् चार–पाँच अध्यापक मात्र एक हजार रूपये वेतन पर काम कर रहे हैं।[1]

इस प्रकार सम्पूर्ण दृश्य इस तथ्य को अवलोकित करता है कि वर्तमान समाज में शिक्षा व्यवस्था को रोजगार का साधन बनाकर धनाढ्य लोग अपने काले धन को सफेद धन में बदलने में जुटे हैं तथा साथ ही साथ इस संस्था के माध्यम से अयोग्य लोग जो अपने ही भाई–भतीजे उन्हें शिक्षक की श्रेणी में लाकर खड़ा करके अपनी सम्पूर्ण सफलता सिद्ध कर रहे हैं।

एकांकी का आरम्भ प्राचार्य कक्ष से होता है, जिसमें प्राचार्य अपने अध्यापक वृन्द को सम्बोधित कर रहे होते हैं। तभी सेवक प्राचार्य कक्ष में प्रवेश करता है और कहता है कि– निरीक्षक महोदय कुछ सहायक लोगों, जीप और हीरोहोण्डा से विद्यालय में प्रवेश कर चुके हैं। प्राचार्य ने निरीक्षक का विधिवत् स्वागत सत्कार किया। तत्पश्चात् निरीक्षक प्राचार्य महोदय से विद्यालय के निरीक्षण कार्य सम्पादन हेतु आग्रह करते हैं तथा विद्यालय की संक्षिप्त विवरण पूछते हैं। प्रत्युत्तर में प्राचार्य यह कहते हैं, श्रीमन् ! पन्द्रह वर्ष पूर्व यह विद्यालय स्थापित हुआ है। इस विद्यालय में कक्षा 12 तक की पढ़ाई होती है। कक्षा 10 में साहित्य और विज्ञान का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है। परन्तु इण्टर कक्षा में केवल साहित्य विषय पढ़ाया जाता है। कक्षा 10 में चार वर्ग हैं। दो–दो वर्ग प्रत्येक विषय में। परन्तु इण्टर कक्षा में एक–एक वर्ग प्रचलित है।[2]

निरीक्षक पुनः पूछता है कि कितने अध्यापक अपने विषय में पारंगत हैं और कितने प्रशिक्षित नहीं हैं ? उन्हें वेतन क्या दिया जाता है ? वेतन कोषागार से प्रबन्धक ही देते होंगें ? प्राचार्य हतप्रभ होकर निरीक्षक को देखने लगते हैं। निरीक्षक पुनः कहता है, हाँ, जानता हूँ, जानता हूँ। यह रोग सर्वत्र समाज में व्याप्त है। सभी प्रबन्धक लोग शिक्षकों को आधा वेतन ही प्रदान करते हैं। जिस प्रकार हाथी के दाँत दिखाने के कुछ और खाने–चबाने के कुछ और हैं। उसी प्रकार प्रबन्धक लोगों का दिखावे का वेतन कुछ और देने का वेतन कुछ होता है। प्रबन्धक लोग विद्यालय की संस्थापना लोक कल्याणार्थ और परमार्थ की

---

1. *'विद्यालयनिरीक्षणप्रहसनम्', नाट्यनवार्णवम्– डॉ0 राजेन्द्र मिश्र, बैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद,2010 ,पृष्ठ संख्या–31*
2. *'विद्यालयनिरीक्षणप्रहसनम्', नाट्यनवार्णवम्– डॉ0 राजेन्द्र मिश्र, बैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद,2010 ,पृष्ठ संख्या–34*

Copyright ⓒ 2020Authors

ISSN 2454-2695
Vol 6 Issue 10 October 2020

भावना से कम कर रहे हैं, परन्तु अर्थ व्यापार के संवर्धन में अत्यधिक लक्ष्य केन्द्रित कर रहे हैं।[1] इस प्रकार मिश्र जी ने शिक्षा जगत् में आई दुर्व्यस्था को रूपायित करते हैं। उनके समस्त उद्धरण शिक्षा की समस्या में चित्रित करते हैं। उनकी ये एकांकियाँ नितान्त कपोल कल्पना का परिणाम नहीं, अपितु समाज की वर्तमान विसंगतियों का जीवन्त प्रस्तुति है। इन सभी विसंगतियों को प्रकट करके वे जन–जन में जागरूकता लाना चाहते हैं। मिश्र जी का इस प्रकार का दृश्य और अदृश्य अभिव्यक्ति यह स्पष्ट करती है कि यदि शिक्षा जगत् की धुमिल तथा समस्याओं का जाल बन जायेगा तो मनुष्य में मनुष्यता का अभाव प्रतीत होने लगेगा।

शिक्षकों का अर्थशोषण –

जिला विद्यालय निरीक्षक को अपने निरीक्षण में दोनों ही स्थितियों का प्रमाणिक परिचय मिल जाता है– एक तो प्रतिभाशाली, कर्मठ प्राध्यापकों का अर्थशोषण और दूसरा पक्ष द्वार से घुसाये गये भाई–भतीजा की ज्ञानशून्यता।

इस प्रकार यह शोषण वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में आयी विसंगतियों को व्यक्त करता है। विसंगतियाँ इस अर्थ में प्रकट होती हैं कि यदि कर्मठ अध्यापक का अर्थ शोषण प्रबन्धक या प्राचार्य द्वारा किया जायेगा तो क्या वे सही ढंग से अध्यापन कार्य कर सकेंगे ? वस्तुतः सही ढंग से अध्यापक अध्यापन कार्य नहीं कर पायेगा। इसका उद्धरण इस प्रकार है– निरीक्षक प्राचार्य के साथ भूगोल के कक्ष के पास आता है तथा भूगोल के अध्यापक द्वारा पढ़ाये जाने वाले तथ्यों को सुनता है। अध्यापक यह पढ़ा रहा है– बच्चों ! यही गंगा नदी, जो हिमायल से निकलकर, हरियाणा–राजस्थान को पार कर पश्चिमी समुद्र में मिल जाती है।' निरीक्षक यह सुनते ही सन्न रह जाते हैं और पूछते हैं– यह सब कहाँ लिखा है? अध्यापक विषादग्रस्त होकर कहता है, श्रीमन् ! यह सब मेरी ललाटलिपि में लिखा है। न कि किसी किताब में। अब निरीक्षक यह कहता है कि इस प्रकार के अध्यापन से तो आप छात्रों का जीवन नष्ट कर रहे हैं, सभी लोग यह जानते हैं कि गंगा हिमालय से निकलकर उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, बिहार तथा बंगा राज्य की भूमि को तरल करते हुए वंगोदधो में विलीन हो जाती है।[2]

प्राध्यापक पुनः कहता है कि जानता हूँ निरीक्षक महोदय, परन्तु मैं क्या कर सकता हूँ। पाँच पुत्रों का पिता हूँ। एक हजार रूपये से मेरी जीवन यात्रा कैसे चल पायेगी। अपनी व्यथा कहते समय प्राध्यापक की आँखों में आँसू आ जाता है। वह कहता है, श्रीमन् ! दश वर्ष व्यतीत हो गये, मैं इस विद्यालय में

---

1. *विद्यालयनिरीक्षणप्रहसनम्', नाट्यनवार्णवम्– डॉ0 राजेन्द्र मिश्र, बैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद,2010 ,पृष्ठ संख्या–34*
2. *विद्यालयनिरीक्षणप्रहसनम्', नाट्यनवार्णवम्– डॉ0 राजेन्द्र मिश्र, बैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद,2010 ,पृष्ठ संख्या–34,35*

Copyright ⓒ 2020Authors

ISSN 2454-2695
Vol 6 Issue 10 October 2020

अध्यापन कार्य कर रहा हूँ। पाँच वर्ष तक प्रति माह मात्र पाँच सौ रूपये वेतन पाता रहा हूँ। तत्पश्चात् एक हजार रूपये पाने लगा। महोदय, मैं इलाहाबाद विश्वविद्यालय का छात्र रहा हूँ। प्रथम श्रेणी में एम0ए0 की परीक्षा मैंने पास की है। मान्यवर, दस हजार के वेतन पत्र पर हस्ताक्षर करवाकर मात्र मुझे एक हजार रूपये दिया जाता है। निरीक्षक यह सुनकर प्राचार्य से क्रोधित भाव से इस अत्याचार और दुर्दशा को ठीक करने का आदेश देते हैं।[1]

इस प्रकार यह इंगित होता है कि शिक्षा व्यवस्था के विकृत होने में प्रबन्धक और उच्च पदस्थ लोगों की शोषित नीति है। हमारे समाज में कर्मठ एवं योग्य प्राध्यापकों की कमी नहीं है, परन्तु कमी यह है कि विद्यालय की स्थापना जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिए लोग किया करते थे, वह भाव अब समाप्त हो गया है। पहले के लोगों में लोक कल्याणार्थ का भाव रहता था, परन्तु वर्तमान समय के लोगों में धनार्जन तथा व्यापारिक वृत्ति का भाव अन्तर्निहित है। यही कारण है कि आज शिक्षा व्यवस्था की मति मन्द प्रतीत होने लगी है। जब विद्यालय की स्थापना करने में रोजगार पाने का भाव परिलक्षित होगा, तब विद्यालय तथा शिक्षा के सम्पूर्ण उद्देश्यों की पूर्ति कपोल कल्पना की ही भाँति होगी।

पक्षपात द्वारा नियुक्त शिक्षकों का अज्ञान :

पक्षपात द्वारा नियुक्त शिक्षक 'हिन्दी–अध्यापक सूर्यदीन माहेश्वरी तथा संस्कृत अध्यापक महानन्द जी तथा अन्य शिक्षक है। सूर्यदीन माहेश्वरी मैनेजर के भतीजे हैं, जबकि पं0 महानन्द जी प्रबन्धक जी के पुरोहित पुत्र हैं। इन शिक्षकों में ज्ञान शून्यता उनके अध्यापन कार्य के फलस्वरूप ही प्रकट हो जाता है। प्रो0 मिश्र द्वारा एकांकी में पक्ष द्वारा से घुसे शिक्षकों की ज्ञान शून्यता का सजीव चित्रण इस रूप में प्रस्तुत हैं– निरीक्षक और प्राचार्य हिन्दी के कक्ष में प्रवेश करते हैं, जिसमें छात्रगण उस कक्ष में कलह करते हुए दिखायी दे रहे थे। प्राचार्य समस्त छात्रों को सम्बोधित करते हुए अपने स्थान पर बैठ जाने का आदेश देते हैं तथा हिन्दी के शिक्षक माहेश्वरी से पाठ पढ़ाने के लिए कहते हैं। तदोपरान्त माहेश्वरी जी बच्चों की ओर ध्यान देते हुए प्रश्न पूछते हैं– मोहन तुम बताओ, जिस प्रकार सूरदास ने सूरसागर की रचना किया, उसी भाँति कबीर दास ने क्या–क्या लिखा ? प्रत्युत्तर में मोहन ने यह कहा कि कबीर दास ने साखी और रमैनी लिखा है। माहेश्वरी जी से पुनः प्रश्न पूछते हैं कि साखी नाम क्या है ? प्रत्युत्तर में मोहन साखी की व्याख्या सखी के रूप में करता है। तत्पश्चात् बच्चे का उत्तर सुनकर माहेश्वरी जी बच्चो

1. *विद्यालयनिरीक्षणप्रहसनम्', नाट्यनवार्णवम्– डॉ0 राजेन्द्र मिश्र, बैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद,2010 ,पृष्ठ संख्या–35*

Copyright ⓒ 2020Authors

ISSN 2454-2695
Vol 6 Issue 10 October 2020

की वाह–वाह करके तारीफ करते हैं तथा पुनः रमेश को रमैनी शब्द का अर्थ जानने के लिए खड़ा करते हैं। रमेश प्रत्युत्तर में बोलता है – 'हे गुरु रामायण शब्द का स्त्रीलिंग रमैनी है।'[1]

वस्तुतः बच्चों द्वारा दिये गये गलत उत्तरों से बच्चों का अज्ञान प्रकट होती है। परन्तु सर्वाधिक अज्ञानता उप शिक्षकों के प्रति प्रकट होती है, जिन्होंने बच्चों को गलत सूचनाएँ सम्प्रेषित किया है। साथ ही साथ शिक्षकों का अज्ञान तब भी प्रकट होता है, जब बालकों के गलत उत्तरों की भी सराहना उत्तम कोटि से की जाय, जैसा कि मि0 माहेश्वरी, मोहन और रमेश के उत्तर की सराहना कर रहे हैं। माहेश्वरी जी बच्चों को शिवधनुष तोड़ने का प्रसंग भी गलत बता रखे हैं। वैसे भी बच्चों को शिव–धनुर्भंग का सन्दर्भ ज्ञात नहीं है और सभी बच्चे उपहासास्पद ढंग से इस सन्दर्भ की व्याख्या करते हैं। जैसे लेखराज नामक छात्र शिवधनुष तोड़ने में अपने मित्र महेश को बताया, प्रभुनाम नामक बालक ने रघुनाथ को शिवधनुष तोड़ने वाला बताया। स्वयं रघुनाथ भी खड़ा होकर यह कहता है कि गुरु जी, शिवधनुष मैंने ही तोड़ा। तत्पश्चात् गुरु पुनः अपने अज्ञान का परिचय देते हुए कहते हैं, 'वत्स रघुनाथ, जानता हूँ, जानता हूँ, शंकर का धनुष तुमने ही तोड़ा है।[2]

अगले कक्षा का निरीक्षण करते हुए निरीक्षक प्राचार्य से पूछता है 'किस विषय की कक्षा है ?' प्राचार्य प्रत्युत्तर में कहते हैं, श्रीमन् ! संस्कृत विषय की कक्षा है तथा संस्कृताध्यापक महानन्द जी प्रबन्धक जी के पुरोहित–पुत्र हैं। कुल के पुरोहित कार्य के कारण विद्यालय में पढ़ाते हैं, परन्तु वो नवरात्रि से निष्ठा के साथ प्रबन्धक के भवन पर दुर्गाशप्तशती का पाठ वाचन भी करते हैं। इतना कहने के उपरान्त प्राचार्य और निरीक्षक कक्ष में प्रवेश करते हैं। उनकी व्याख्यायें भी, जो उन्होंने बच्चों को बता रखी है, विलक्षण कोटि की है। महानन्द जी कक्षा में बच्चों की ओर ध्यान देते हुए प्रणव नामक बालक से ब्रह्म का रूप बताने को कहते हैं। प्रणव बोलता है– ब्रह्मा, ब्रह्मणी, ब्रह्माणि। ब्रह्म, ब्रह्मणी, ब्रह्माणि। ब्रह्माणा, ब्रह्मभ्याम् .....। महानन्द प्रसन्न होते हुए कहता है बहुत अच्छा, वत्स अब यह बताओ, ब्रह्म शब्द में कौन सा लिंग प्रयुक्त होता है। बालक उत्तर देता है, आचार्य बह्म शब्द नपुंसकलिंग है। आचार्य फिर पढ़ाते हैं, बच्चों कितना आश्चर्य है कि ब्रह्म शब्द है तो नपुंसक, फिर भी नपुंसक होते हुए भी वही ब्रह्म चतुर्विध सृष्टि करता है।

---

1. *विद्यालयनिरीक्षणप्रहसनम्', नाट्यनवार्णवम्– डॉ0 राजेन्द्र मिश्र, बैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद,2010 ,पृष्ठ संख्या–36,37*
2. *विद्यालयनिरीक्षणप्रहसनम्', नाट्यनवार्णवम्– डॉ0 राजेन्द्र मिश्र, बैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद,2010 ,पृष्ठ संख्या–37*

Copyright ⓒ 2020Authors

निरीक्षक रोकता है आचार्य को, कि क्या पढ़ा रखा है आपने ? अरे शब्दों के लिंग और शब्द–वाच्य (पुरुष अथवा स्त्री) का क्या साम्य ? कलत्र शब्द भी नपुंसक लिंग है तो क्या कलत्रार्थक पत्नी नपुंसक होती है ?

आचार्य महानन्द कहते हैं– श्रीमन् ! होती क्यों नहीं है ? बन्ध्या स्त्री नपुंसक ही तो होती है, इस उत्तर से निरीक्षक हतप्रभ हो जाता है।[1]

शिक्षकों में उत्तरदायित्व का अभाव :

शिक्षा जगत् में शिक्षकों के उत्तरदायित्वहीनता का वृहत व्याख्या प्रो0 राजेन्द्र मिश्र ने उद्धृत किया है। शिक्षकों में उत्तरदायित्वहीनता का भाव वस्तुतः कई कारणों से उत्पन्न हो रहा है। कहीं–कहीं यह देखा जा रहा है हकि अत्यधिक शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त लोग जब उच्च शिक्षा के अध्यापन क्षेत्र में नहीं आ पाते हैं तो लोग प्राथमिक शिक्षक बनने हेतु प्रयास में लग जाते हैं। प्राथमिक शिक्षक बनने के बाद लोग अपने–आपको हीन अनुभव करने लगते हैं तथा उत्तरदायी भाव से पढ़ाने का कार्य नहीं करते हैं। एक अन्य कारण यह भी देखा गया है कि लोग अपने प्रोफेशन में उत्तम करके भी जीविका का साधन नहीं जुटा पाते हैं, तो लोग अनुचित ढंग से शिक्षण जगत् की ओर अग्रसर होते हैं। शिक्षिकाओं का रूप के आधार पर शिक्षक की नौकरी पाना एक सबसे महत्वपूर्ण कारण है।

इस प्रकार ये कारण शिक्षकों में उत्तरदायित्व को विषरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका प्रदर्शित करते हैं। प्रो0 राजेन्द्र मिश्र अपने एकांकी 'बेताल प्रहसनम्' में एक शिक्षिका के अनुचित कार्यों का प्रदर्शन अदृश्य बेताल (हरिहर की आत्मा) के माध्यम से व्यक्त करवाते हैं। यही कवियित्री शिञ्जिनी जी हैं जो दस वर्षों तक हरिहर कवि को प्रेम और पाणिग्रहण का झांसा देती रहती है और अन्ततः कालेज में नौकरी पाने के लिए खूसट मैनेजर की ही गृहणी बन बैठी।[2]

इससे मिश्र जी स्पष्ट करना चाहते हैं कि शिक्षा जगत् में इस प्रकार की नौकरी अर्जित करना एक विसंगति है और इस प्रकार से नौकरी पाने वाले लोगों में अध्यापन कौशल और अध्ययन की रुचि दोनों ही नहीं विद्यमान होती है। परन्तु धनार्जन का भाव उनमें सर्वाधिक भरा होता है।

'प्रत्यक्षरौरवम्' नामक एकांकी का शिल्प एकदम नया है तथा अभिनय की दृष्टि से अत्यन्त सरल तथा रुचिवर्धक भी है। इस एकांकी के माध्यम् से मिश्र जी ने वर्तमान भारतीय समाज के शिक्षा व्यवस्था में शिक्षकों की दूषित मानसिकता को उजागर किया है, जो पूर्णतया उत्तरदायित्व विहीन शिक्षक के क्रियाकलापों को लक्षित करता है। इस एकांकी में मानवाधिकार आयोग का एवं सदस्य जेल के कैदियों

---

1. *विद्यालयनिरीक्षणप्रहसनम्', नाट्यनवार्णवम्– डॉ0 राजेन्द्र मिश्र, बैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद,2010 ,पृष्ठ संख्या–38*

2. *'वेताल प्रहसनम्' नाट्यनवार्णवम्– डॉ0 राजेन्द्र मिश्र, बैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद,2010 ,पृष्ठ संख्या–61*

 Copyright ⓒ 2020Authors

ISSN 2454-2695
Vol 6 Issue 10 October 2020

का निरीक्षण करने आता है कि वहाँ किसी कैदी के साथ कोई बर्बर व्यवहार तो नहीं हो रहा है ? जेलर श्री लोहा सिंह सदस्य महोदय को जेल का मुआयना करवाते हैं, जिसमें एक बढ़ी दाढ़ी वाले, दार्शनिक व्यक्ति को देखते हुए सदस्य कहता है जेलर महोदय यह विश्वविद्यालय का प्राध्यापक किस अपराध के कारण जेल में बन्द है। लोहा सिंह पुनः यह कहता है कि यह व्यक्ति विश्वविद्यालय का प्राध्यापक होते हुए भी जाली अंक पत्र एवं उपाधि पत्र बेचने के काम में लिप्त था। इसे केन्द्रीय जाँच ब्यूरो के गहन अनुसंधान के उपरान्त कारागार में रखा गया है। इसे विश्वविद्यालय से भी निष्कासित कर दिया गया है।[1]

इस प्रकार यह एकांकी भी शिक्षक के अनैतिक कृत्य को इंगित करती है तथा यह वर्णन अद्यतन समाज की कुरीतियों को प्रकट कर रहा है। शिक्षा की दुर्दशा का जिम्मेदार किसे माना जाय ? यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। मिश्र जी इन एकांकियों के माध्यम से यह व्यक्त किये हैं कि शिक्षा जगत् के वे सभी लोग दोषी हैं, जो सही शिक्षा देने, लेने का भाव भूल बैठे हैं।

1. *'प्रत्यक्षरौरवम्', नाट्यनवरत्नम् –, डॉ0 राजेन्द मिश्र ,वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद, 1977, पृष्ठ–74*

Copyright ⓒ 2020Authors